

अक्रम युथ

जून २०१७ | हिन्दी

दादा भगवान परिवार

₹ १२





संपादकीय

प्रिय दोस्तों,

आज-कल हम सब पर टेक्नोलोजी का भूत सवार है और हम सब उसके अधीन हो गए हैं। यदि कोई मशीन अगर हमारी धारणा के अनुसार नहीं चले तो हम गुस्सा हो जाते हैं। कई बार मशीन में कोई समस्या नहीं होती, लेकिन हमें उसकी कार्य पद्धति का पता नहीं होता इसलिए ऐसा हो जाता है। इसीलिए जब भी हम कोई नई चीज़ खरीदते हैं, तब हमें मार्गदर्शिका एवं उसके इस्तेमाल के तरीके का निर्देशन दिया जाता है ताकि हम उसका उपयोग अच्छी तरह से कर सकें। लेकिन हमारे अमूल्य मानव जीवन के लिए हमें ऐसी कोई भी मार्गदर्शिका या निर्देशन नहीं मिलता। विविध परिस्थितियों में हम स्थिरता नहीं रख पाते और परेशान हो जाते हैं, गुस्सा करते हैं या फिर निराश हो जाते हैं वगैरह-वगैरह। कई बार दृढ़ निश्चय करने के बावजूद भी जैसा चाहिए वैसा व्यवहार नहीं कर पाते और हम निःसहाय महसूस करते हैं कि, ऐसा क्यों?

दादाश्री कहते हैं कि पाँच इन्द्रियों से हम जो कुछ भी करते हैं या महसूस करते हैं, वह पहले हमारे अंदर होता है और बाद में बाहर परिणाम में आता है। इसलिए अगर हम मानव के सूक्ष्म और स्थूल शरीर की प्रक्रियाएँ एवं इनके कार्यों को समझें, तो हमारा भी जीवन सरल और सुखी बन सकता है। “अक्रम-यूथ” के इस अंक में हम मानव शरीर के आंतरिक हिस्से “अंतःकरण” को समझेंगे। “अंतःकरण” जिसके बारे में पूरी दुनिया जानना चाहती है और दादाश्री ने सब से पहली बार इस बारे में स्पष्टीकरण दिया है।

अतःकरण किस प्रकार काम करता है, वह समझ लेने से, कोई भी व्यक्ति अपने तय किए हुए मार्ग पर, विपरीत संयोगों में बिना भटके, आसानी से प्रगति कर सकता है।

पढ़ने का आनंद लो! जय सच्चिदानंद!

-डिम्पल मेहता

Contents

संपादक : डिम्पल मेहता

वर्ष : ५, अंक : ०२

अखंड क्रमांक : ५०

जून २०१७

संपर्क सूत्र :

ज्ञानी की छाया में,

त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,

अहमदाबाद-कलाल हाइवे,

मु.पां. - अडालज,

जिला : गांधीनगर-३८२४२१, गुजरात

फोन : (०७९) ३९८३०१००

email: akramyouth@dadabhagwan.org

website: youth.dadabhagwan.org

Printed & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Owned by

Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

Printed at

Amba Offset

B-99, K6 Road, Electronics GIDC,
Sector 25, Gandhinagar - 382044,
Gujarat, India

Published at

Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj -
382421. Dist- Gandhinagar

कुल २४ पेज कवर पेज सहित

सदस्यता शुल्क

वार्षिक

भारत : १२५ रुपए

यू.एस.ए. : १५ डॉलर

यू.के. : १० पाउन्ड

पाँच वर्ष

भारत : ५०० रुपए

यू.एस.ए. : ६० डॉलर

यू.के. : ४० पाउन्ड

D.D/M.O. महाविदेह फाउन्डेशन के
नाम पर भेजें।

०४

शिवा और उसके तीन दोस्त

०७

आज की पीढ़ी के लिए दिशासूचक पुस्तकें

०८

दादाश्री के पुस्तक की झलक

१०

Q & A

१२

महान पुरुषों की झांकी

१५

अंदर-बाहर

१६

मैं आभारी हूँ

१७

कॉमनसेन्स

१८

क्या आप जानते हैं?

२०

ज्ञानी विद यूथ

२२

चलो खेलें

२३

हैपीनेस कैम्प



You need to download QR Code Scanner App from Play store or iTunes Store

Visit : <http://youth.dadabhagwan.org/Gallery/Akram-Youth>

Download free ebook / PDF versions of all
Akram Youth issues by scanning this QR code

शिवा और उसके तीन दोस्त

अंधेरा होने जा रहा था, लेकिन शिवा अभी भी अपने दिल्ली स्थित ऑफिस में था। वह गहरी सोच में था। उसका दिन कोई भी सकारात्मक (अच्छी) याद छोड़े बिना ही बहुत तेज़ी से बीत गया था। उसे बहुत आघात लगा था और उस दिन की बॉर्ड मीटिंग में उसने जो सुना था उस पर उसे अभी भी यकीन नहीं हो रहा था। कंपनी के चीफ फाइनेंस अफसर ने चेतावनी दी थी कि, कंपनी नादार हो जाने वाली है। पाँच वर्षों के बाद वह पहली बार भारत आया।

शिवा एक आई.टी. इंजिनियर है, उसे याद आया कि सात साल पहले यू.एस. की एक प्रसिद्ध कंपनी में नौकरी मिलने के बाद खूब मेहनत करके शिवा ने काफी पैसा कमाया और अब उसने खुद की कंपनी शुरू करने का निश्चय किया। अपने देश में खुद का व्यवसाय स्थापित करके, उसके विकास में सहायक बनने और युवा पीढ़ी को प्रोत्साहित करने के नेक इरादे से थोड़े दिनों के लिए वह भारत आया था। उसने अपने तीन पुराने दोस्तों - मनदेव, बुद्धिप्रकाश एवं चित्रांग को वॉटर प्योरिफायर के निर्माण के लिए फाइनेंस और मैनेजमेन्ट के कार्य में सहायता करने के लिए मना लिया। मनदेव को निर्माण (मैनुफैक्चरिंग) की ज़िम्मेदारी दी गई, चित्रांग को मार्केटिंग की ज़िम्मेदारी दी और बुद्धिप्रकाश को संचालन (एडमिनिस्ट्रेशन) की एवं शिवा को आर.एंड डी. हैड की ज़िम्मेदारी दी गई। वे सब होशियार और अपने-अपने काम में निपुण थे। उनका शुरुआत से ही व्यापार तेज़ी से बढ़ने लगा। सबकुछ अच्छी तरह से चल रहा था, इसलिए उन्होंने अपने व्यापार को



बहुत फ़ैला दिया।

सफलता ने उसके सभी दोस्तों को बहुत बदल दिया। मनदेव ज्यादातर अपने दिमाग पर नियंत्रण रखने और योग द्वारा विचारशून्य दशा प्राप्त करने के प्रयत्न में ही लगा रहता था। चित्रांग को सभी प्रकार की बुरी आदतें लग गई थीं। शराब पीना, ऑफिस में गोम्स खेलना या मूवी देखना। वे दोनों जहाँ व्यर्थ की बातों में लगे थे वहाँ बुद्धिप्रकाश किसी भी प्रकार के निर्णय नहीं ले पाता और उसने शिवा को सही रिपोर्ट देना भी छोड़ दिया था। परिणाम स्वरूप व्यापार घटने लगा और उनका जीवन भी अधःपतन की ओर जाने लगा था।

इस दौरान मनदेव बहुत घमंडी बन गया था। वह सभी के साथ अपमानजनक व्यवहार करता था। चित्रांग अपनी बुरी आदतों के कारण बहुत से असाध्य रोगों का शिकार बन गया था। उसकी एकाग्रता इतनी बिखर गई थी कि वह व्यापार की किसी भी प्रकार की बातों में ध्यान नहीं दे पाता था। बुद्धिप्रकाश कोई भी कार्य स्वयं नहीं कर पाता था। लेकिन वह इस समस्या के बारे में शिवा को पता ही नहीं चलने देता था, क्योंकि हो सकता था कि शिवा कंपनी ही बंद कर दे।

जब सब लोग छोड़ रहे थे तब शिवा को लगा कि अब (उसका) घर लौटने का समय आ गया है। वह अपने माता-पिता के घर आया। वह इतना थक गया था कि भूख के बजाय उसे नींद आ रही थी। बिस्तर पर लेटे-लेटे शिवा ने अपने आप को बहुत निःसहाय महसूस किया। उसे अविरत विचार आने लगे कि गलती कहाँ हो गई? किस वजह से उसके दोस्तों का अधःपतन हो गया? क्यों? अपनी जिम्मेदारी निभाने में वह कहाँ निष्फल रहा?



दोस्तों और व्यापार को किस तरह से वापस राह पर लाया जाए?

दोस्तों, मुझे विश्वास है कि जो प्रश्न शिवा के मन में उठ रहे हैं, उसके लिए आप भी आतुर होंगे। तो चलो, ऐसा किस तरह से हुआ और अपने आप को हम अधःपतन से कैसे उबारें, उसे समझने की कोशिश करेंगे।

विश्लेषण

शुरुआत की सफलता के बाद मनदेव अपनी बुद्धि के कहे अनुसार करने लगा। अपनी कंपनी को ज्यादा फ़ैलाने से वह देश की श्रेष्ठ कंपनी बन जाएगी, ऐसे सपने देखने लगा। हमेशा असंतोषी रहना, ऐसा चित्रांग का रवैया था, इसलिए उसकी सोच ज़रूरत से ज्यादा भौतिक बन गई। बुद्धिप्रकाश, उन दोनों के मंतव्य के अनुसार अपने प्रयत्न करता, खुद विश्लेषण

नहीं करता था और ना ही विश्लेषण पर ध्यान देता था, जो कि कंपनी की विस्तृतीकरण की योजना के लिए अनुकूल नहीं था। वह पैसों के लालच से उनकी योजना से सहमत हो जाता था। तीनों दोस्तों के रवैये के कारण शिवा को अनिच्छा से पेमेन्ट्स रोकना पड़ा। दो ही सालों में, कंपनी के विस्तार के लिए उन्हें अपने मुनाफे को फिर से रोकना पड़ा और ज्यादा ब्याज की दर पर बाहर से लोन भी लेना पड़ा। इससे उनका प्रोडक्शन तो तत्काल तीना गुना हो गया, लेकिन कमज़ोर आर्थिक परिस्थिति के कारण, माल की बिक्री कम हो गई और बहुत सारा माल पड़ा रहा। कम वसूली और चढ़ते हुए ब्याज के कारण कंपनी ठप्प पड़ गई। बढ़ते हुए तनाव और हताशा में धिरकर, कंपनी की इस हालत के लिए तीनों एक-दूसरे पर दोषारोपण करने लगे।

उनकी असफलता उन्हें अलग-अलग दिशा में ले गई और उन्होंने अपना अंगत जीवन सुधारने के लिए अलग-अलग तरीके अपनाए।

मनदेव असफल होने पर - अन्य परिबलों को जाँचे बगैर अपनी बुद्धि का ही सुनता था।

चित्रांग असफल होने पर - ज्यादा पैसे कमाने और सुखी होने की अपेक्षाएँ बहुत ज्यादा बढ़ाता गया।

बुद्धिप्रकाश असफल होने पर - स्वार्थी और अप्रमाणिक बन गया।

शिवा असफल होने पर - अपने दोस्तों पर अंधा विश्वास रखा और उसने किसी प्रकार की सावधानी भी नहीं रखी।

हमारा अंतःकरण शिवा (अहंकार)

और उसके तीन दोस्तों (मन, चित्त और बुद्धि) जैसा है। ऐसा ही हमारा जीवन है। ये चारों स्तंभ जैसे हैं। एक भी स्तंभ अगर कमज़ोर पड़ जाए तो पूरा मकान, ताश के महल की तरह गिर जाएगा।

किसी भी चीज़ को जब तीन दोस्तों (मन, बुद्धि, चित्त) द्वारा विश्लेषण करके कहा जाए, तब “I” (अहंकार) को अंतिम सहमति देने का अधिकार है। “आई” का, एक बॉस के तौर पर यह कर्तव्य है कि जब उन तीनों द्वारा जो कुछ भी कहा जाए या दिखाया जाए उसमें अंधी सहमति नहीं देनी चाहिए, लेकिन “क्या अच्छा है और क्या बुरा है” उसका ध्यान रखकर हमेशा निर्णय लेना चाहिए।

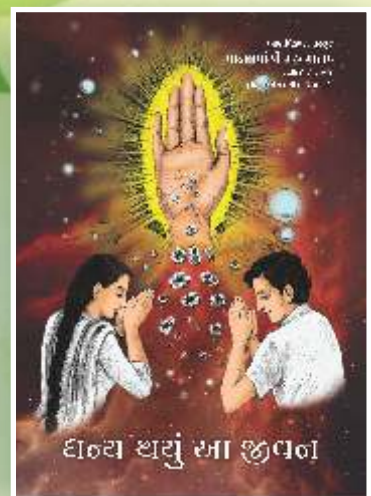
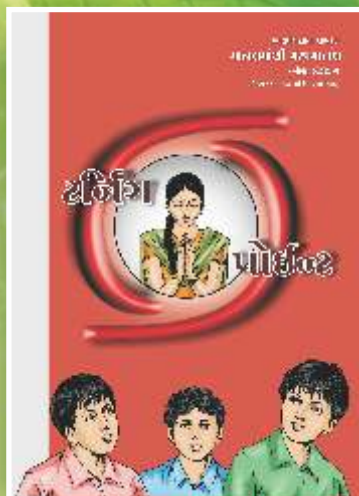
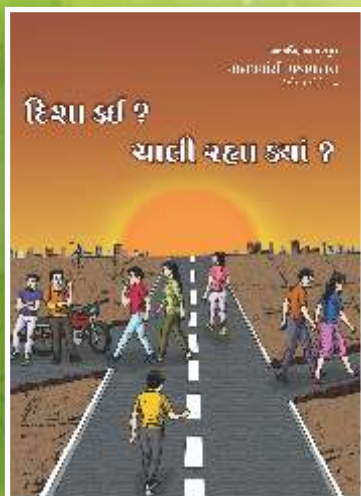
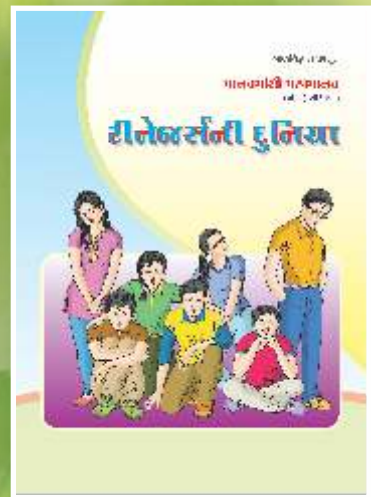
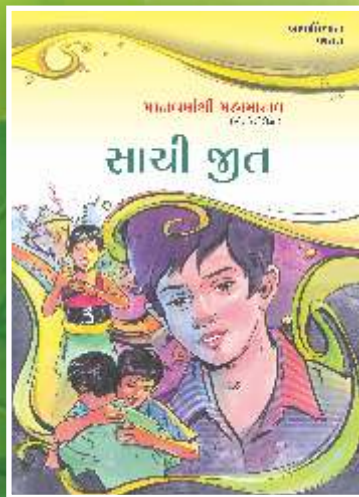
कमज़ोर अंतःकरण की निशानी

ईर्ष्या, तुलना करना, किसी भी कार्य में एकाग्रता की कमी, कमज़ोर यादशक्ति, कमज़ोर ग्रहण शक्ति, निर्णय न ले पाना, कमज़ोर आत्मविश्वास, डरपोकपना वगैरह...

हमारे अंतःकरण को कौन कमज़ोर बना देता है :

दूसरों के दोष देखना, दूसरों के बारे में नकारात्मक बोलना, झूठ बोलना, धोखा देना, टी.वी./मुवीज़ देखना, कम्प्यूटर, मोबाइल पर गेम खेलना और लड़कियों को घूरते रहना वगैरह।

आज की पीढ़ी के लिए दिशासूचक पुस्तकें



दादाश्री के पुस्तक की झलक

पूरा वर्ल्ड जो साइन्स ढूँढ रहा है, उस साइन्स का संपूर्ण स्पष्टीकरण सब से पहले हम दे रहे हैं। मन को समझना बहुत मुश्किल है। मन क्या? बुद्धि क्या? चित्त क्या? अहंकार क्या है? इन सब का ज्यों का त्यों स्पष्टीकरण दे रहे हैं।

अंतःकरण चार चीजों से बना हुआ है। १) मन २) बुद्धि ३) चित्त और ४) अहंकार। चारों रूपी हैं और पढ़े जा सकते हैं। चक्षुगम्य नहीं है, ज्ञानगम्य हैं। कम्प्लीट फिज़िकल हैं। शुद्ध आत्मा का और इनका कुछ भी लेना-देना नहीं है। उससे संपूर्ण अलग ही है। हम संपूर्ण अलग हैं, इसलिए उसका वास्तविक वर्णन कर सकते हैं।

हर एक का फंक्शन (कार्य) अलग-अलग है फिर भी हर एक कार्य चारों के सहकार से ही हो सकता है। मनुष्य देह जिस आधार पर कार्य करता है, उसके दो विभाग हैं - १) स्थूल - बाह्य विभाग, जिसे बाह्यकरण कहते हैं। २) सूक्ष्म - अंतर विभाग, जिसे अंतःकरण कहते हैं।

किसी भी कार्य का पहला चित्र, पहली छाप एक्ज़ेक्ट अंतःकरण में पड़ती है और बाद में वही बाह्यकरण में तथा बाह्य जगत् में रूपक में आता है।

जो शरीर से कभी भी बाहर न निकले, वह मन है। मन तो अंदर बहुत उछल-कूद करता है। तरह-तरह के पैम्प्लेट दिखाता है। मन का स्वभाव भटकना नहीं है। लोग कहते हैं कि मेरा मन भटक रहा है, वह गलत है। जो भटकता है वह चित्त है। सिर्फ चित्त ही इस शरीर से बाहर जा सकता है। वह ज्यों के त्यों फोटो खींचता है। उसे देख सकते हैं। बुद्धि सलाह देती है और बुद्धि डिसिज़न लेती है और अहंकार उसमें हस्ताक्षर करता है। मन-बुद्धि और चित्त, इन तीनों की सौदेबाज़ी चलती



Visit : <https://goo.gl/ITQyAT>



Download free ebook version
of above Book
by scanning this QR code

है। बुद्धि दोनों में से जिसके साथ मिल जाए, चित्त के साथ या मन के साथ, उसमें अहंकार हस्ताक्षर कर देता है।

उदाहरण के तौर पर आप सान्ताक्रुज़ में बैठे हैं और अंदर मन पैम्फलेट दिखाए कि दादर जाना है, तो चित्त तुरंत ही दादर पहुँच जाएगा और दादर का हूबहू फोटो यहाँ बैठे-बैठे दिखेगा। फिर मन दूसरा पैम्फलेट दिखाएगा कि चलो बस से चलते हैं, तो चित्त बस देखकर आएगा। मन वापस तीसरा पैम्फलेट दिखाएगा कि टैक्सी से ही चलते हैं फिर चौथा पैम्फलेट दिखाएगा कि ट्रेन से चलते हैं। तब चित्त ट्रेन, टैक्सी, बस सब देखकर आ जाएगा। उसके बाद चित्त टैक्सी ही दिखाता रहेगा, अंत में बुद्धि डिसिज़न ले लेगी कि टैक्सी से ही जाएँगे, तो अहंकार इन्डिया के प्रेसिडेन्ट की तरह हस्ताक्षर कर देगा। फिर तुरंत ही कार्य हो जाएगा। और आप टैक्सी की राह देखने लगोगे। जैसे ही बुद्धि डिसिज़न देगी, मन तुरंत ही पैम्फलेट दिखाना छोड़ देगा। फिर वापस दूसरे विषय का पैम्फलेट दिखाएगा। अहंकार, बुद्धि और मन पर हस्ताक्षर करेगा या फिर बुद्धि और चित्त पर हस्ताक्षर करेगा। मन और चित्त में बुद्धि तो कॉमन रूप से रहती है। क्योंकि बिना बुद्धि के किसी भी कार्य का डिसिज़न नहीं ले पाएँगे और जैसे ही डिसिज़न आ जाएगा तो अहंकार हस्ताक्षर कर देगा और कार्य हो जाएगा। बिना अहंकार के तो कोई भी काम नहीं हो सकता, पानी पीने के लिए भी नहीं उठ सकते।

अंतःकरण तो पार्लियामेन्टरी सिस्टम है

देह के साथ अंतःकरण की भेंट एक ही घंटे के लिए ज्ञानीपुरुष के चरणों में रखकर यदि उनके संग बैठेंगे तो जगत् के मालिक बन जाएँगे। उस एक घंटे में तो हम आपके पापों को भस्मीभूत कर देते हैं और आपके हाथों में दिव्यचक्षु दे देते हैं, शुद्धात्मा बना देते हैं। फिर आपको चाहे जहाँ जाना हो वहाँ जाइए। ठेठ मोक्ष तक यह ज्ञान तो आपके साथ ही रहेगा। यहाँ हमारी हाज़िरी में अंतःकरण की शुद्धि होती रहती है। उसमें अगर दुःख हो रहा हों तो वह नहीं होता और शुद्धि होती है। उस शुद्धि से तो सच्चा आनंद उत्पन्न होता है! हमेशा की शांति लगती है!

बच्चे जब पढ़ रहे हों तब मन-बुद्धि-चित्त और अहंकार - चारों हाज़िर रहें तो एक ही बार पढ़ना पड़ेगा, फिर से पढ़ना नहीं पड़ेगा! लेकिन यह तो यहाँ पढ़ते हैं और चित्त क्रिकेट खेलने में रहता है, इसलिए पढ़ा हुआ सारा व्यर्थ जाता है। पलंग का एक पैर अगर टूटा हुआ होगा तो क्या होगा? कैसा फल देगा? अंतःकरण का भी ऐसा ही है।

मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार के भौगोलिक स्थान -

सूक्ष्म मन का स्थान दो भ्रमर के मध्य से ढाई इंच अंदर रहता है और स्थूल मन हृदयकमल की पंखुड़ियाँ हैं। सिर के पीछे जहाँ चोटी बाँधते हैं वहाँ स्थूल चित्त का स्थान है और सूक्ष्म चित्त बुद्धि के साथ रहता है। वह अरूपी है, मन रूपी है। जो भटकता रहता है वह सूक्ष्म चित्त है। स्थूल चित्त में से सूक्ष्म उत्पन्न हुआ है। बुद्धि का स्थान तालु पर (ब्रह्मरंध्र दसवें स्थान में) है और स्थूल अहंकार का स्थान कमर से नीचे, पीछे है। जहाँ पर बच्चों को शाबाशी देते हैं वहाँ पर। इन चारों के फोटो लिए जा सकते हैं।

QUESTION & ANSWER

प्रश्नकर्ता : अंतःकरण किस प्रकार बिगड़ता है? उससे मेरे जीवन पर कैसा असर या बदलाव आएगा?

उत्तर : दूसरों को दुःख देंगे तो बिगड़ेगा, विनाशी चीज़ों पर मोह करने से बिगड़ेगा, पाँच इन्द्रियों के सुख में जितना मोह बढ़ेगा उतना अंतःकरण बिगड़ेगा (चित्त बिगड़ेगा, बुद्धि बिगड़ेगी, अहंकार बिगड़ेगा, मन बिगड़ेगा, सब बिगड़ जाएगा फिर) खाना-पीना, घूमना-फिरना, पार्टियाँ, मौजशौक, टी.वी., मूवी, इन्टरनेट वगैरह से सारी शक्तियाँ खत्म हो जाती हैं। सदुपयोग करें तो उत्तम है लेकिन इंसान दुरुपयोग किए बिना रह नहीं सकता। क्योंकि भान ही नहीं है न, “गलत कर रहा हूँ या सही कर रहा हूँ।” इसलिए इसके दो उपाय हैं। एक तो सही सत्संग या दो अच्छे संस्कारी व्यक्तियों के संग में रहना। वे कुछ अच्छा कर रहे हों तो हम भी देखकर सीखेंगे और अगर वे गलत कर रहे हों तो हम गलत सीखेंगे, देखकर सीख सकते हैं। कुसंग से व्यक्ति बिगड़ता रहता है। व्यसन और कुसंग से व्यक्ति का नाश हो जाता है। और

संस्कारी व्यक्तियों के संग रहने से उसकी सूझ बढ़ेगी, ज्ञान बढ़ेगा और डेवलपमेंट बढ़ेगा और कुसंग तो बेचारे को अधोगति में ले जाएगा।

प्रश्नकर्ता : कमज़ोर मन, अशुभ चित्त, नेगेटिव बुद्धि या चोट खाए हुए अहंकार को कैसे ठीक करें?

उत्तर : कुसंग से और विषय के मोह से, सब खत्म हो जाता है। व्यक्ति फ्रेड्र हो जाता है। इसका उपाय इतना ही है कि सत्संग में आना चाहिए और अगर सत्संग न मिले तो समझ लेना है कि अब इसका ठिकाना नहीं है। उसकी लिंक भटकने की होगी तो फिर उसे कुसंग मिलेगा और उसे खत्म कर देगा। मूल से, जड़मूल से नाश कर देगा, तहस-नहस कर देगा। इसलिए इसका उपाय यही है कि धर्म की ओर मुड़ें और अगर धर्म नहीं कर पाएँ तो अच्छे व्यक्तियों के जीवनचरित्र को पढ़ना चाहिए, उच्च पुरुषों के, संतों-महंतों, ज्ञानियों के। धर्म की ओर अगर मुड़ेगा तो इंसान फिसलने से बच जाएगा। धर्म उसे पकड़कर रखेगा, फिसलने नहीं देगा। वर्ना ज़िंदगी बिगड़ने का सवाल है। जैसे ज्यादा शराब पीने वाले व्यक्ति को



(शराब की) ज्यादा तलब लगती है और उसकी शक्ति खत्म हो जाती है। यह भी होश नहीं रहता कि कहाँ जाना है, गटर में पड़ा रहता है। उसमें चलने की भी शक्ति नहीं रहती, बोलने की शक्ति नहीं रहती, उल्टी-दस्त होने लगते हैं, लेकिन कुछ होश नहीं रहता। मोही और शराबी एक जैसे कहलाते हैं।

प्रश्नकर्ता : हम अपने मन, बुद्धि और अहंकार के प्रति सिन्सियर कैसे रहें?

उत्तर : हमें उनके प्रति सिन्सियर नहीं रहना है, हमें अपने ध्येय के प्रति सिन्सियर रहना है, और वे हमें फोलो करेंगे। वे हमारे गाइड नहीं है। अर्थात् अगर हम ध्येय तय करेंगे तो मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार उस ओर मुड़ जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : किस तरह?

उत्तर : हम अगर सोचें कि किसी को मारना है, तो फिर कैसे मारें, कब पकड़ में आएगा, फिर कैसे उसे सीधा करेंगे वगैरह उल्टा चक्कर चलने लगता है। लेकिन अगर ऐसा सोचें कि मुझे हेल्प करनी है, तो मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार उस ओर मुड़ेंगे। मैं दादा

के काम में जुड़ना चाहता हूँ ऐसा सोचें, तो मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार उस ओर जाते हैं। मैं ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहता हूँ, ऐसा तय करें, तो मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार उस ओर मुड़ जाते हैं। अर्थात् ध्येय तय करेंगे तो ये सभी भी उस ओर मुड़ेंगे और ध्येय के प्रति सिन्सियर रहेंगे तो मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार सपोर्ट करेंगे।

प्रश्नकर्ता : यानी ऑटोमैटिक मुड़ जाएँगे?

उत्तर : ऑटोमैटिक मुड़ जाएँगे। अगले जन्म का भरा हुआ माल शोर मचाएगा, लेकिन हमें उसका कहना नहीं मानना है कि “तेरी बात मैं नहीं मानूँगा, मैं तो मेरे ध्येय के अनुसार चलना चाहता हूँ”। फिर हम जीत जाएँगे। इसलिए ध्येय तय करो और ध्येय के प्रति सिन्सियर रहो। पिछले जन्म में जो गलत ध्येय था उसका फल ये मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार हैं। इसलिए उसकी वैल्यू नहीं है। आज के ध्येय की, आज की समझ, आज का ज्ञान, आज का निश्चय वगैरह के प्रति सिन्सियर रहने की ही बड़ी कीमत है, समझ में आया न?

महान पुरुषों की झांकी

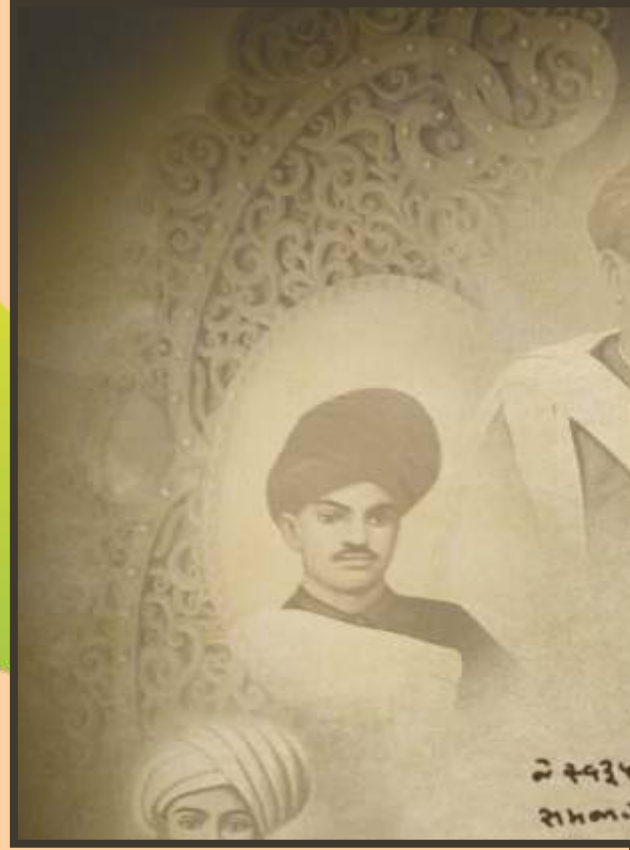
श्रीमद् राजचंद्र

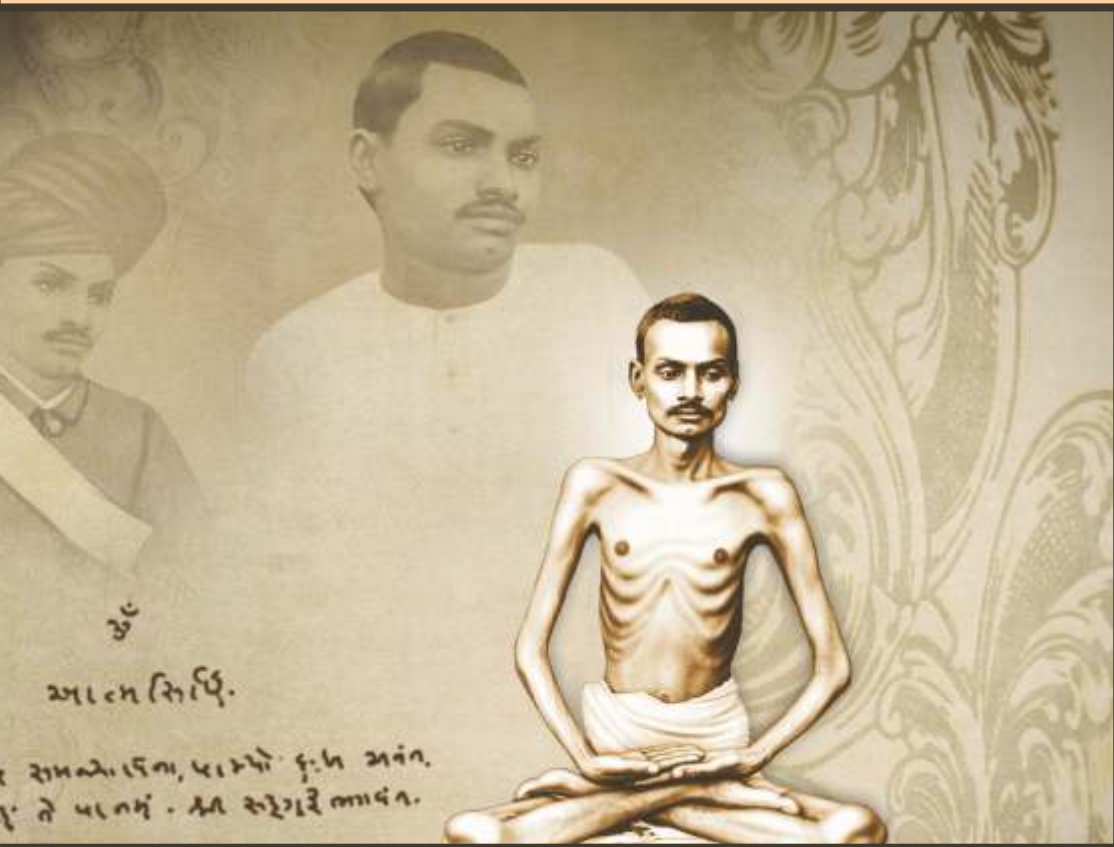
शुद्ध अंतःकरण वाले कई महात्माओं ने भूतकाल में अपने आशीर्वाद हमारे देश पर बरसाए हैं। ऐसे ही एक महात्मा थे श्रीमद् राजचंद्र जी, एक महान आध्यात्मिक गुरु। उनका जन्म १८६८ में गुजरात के मोरबी के ववाणीया नामक गाँव में हुआ था। उनके बचपन का नाम लक्ष्मीनंदन था जो बाद में राजचंद्र हो गया। उनके अनुयायियों ने उनके देहविलय के बाद उनके नाम के साथ मानवाचक संबोधन “श्रीमद्” शब्द लगा दिया।

श्रीमद् राजचंद्र ज्ञानीपुरुष थे। उनके ज्ञान ने, दादा भगवान और कई सामाजिक और आध्यात्मिक महानुभावों को प्रेरणा दी थी। विविध धर्मों के अभ्यास के बाद, श्रीमद् जी को जैन धर्म में अपने आध्यात्मिक जीवन का मार्ग मिला। लेकिन उन्होंने धर्म और

अध्यात्म के नाम पर होने वाले क्रिया-कांड का विरोध किया। अध्यात्म में संप्रदाय की कोई भूमिका नहीं होती, ऐसी उनकी मान्यता थी। वे कहते थे कि, “अध्यात्म के मार्ग पर चलने वाले सभी लोगों के लिए यह मार्ग खुला है। साधारण लोग भी समझ सकें, ऐसी सरल भाषा में उन्होंने कई पुस्तकें और लेख लिखे हैं। वे इन पुस्तकों द्वारा अध्यात्म का संदेश लोगों तक पहुँचाने में सफल रहे थे। उनके द्वारा लिखे गए पुस्तकों में से सबसे प्रसिद्ध पुस्तक “आत्मसिद्धि शास्त्र” है।

युवा राजचंद्र के पास असाधारण धारण शक्ति और स्मरणशक्ति थी। पाठशाला जाने लगे तब वे सिर्फ साढ़े सात वर्ष के थे, फिर भी एक ही महीने में उन्होंने अंकगणित में कुशलता प्राप्त की थी। आठ साल की उम्र से वे कविताएँ लिखने लगे थे। और ऐसा कहा जाता है





कि एक साल में उन्होंने ५००० पदों की रचना की थी। नौ साल की उम्र में उन्होंने रामायण और महाभारत पर छंद रचे थे। इसी समय के दौरान वे सोच और तर्क में ज्यादा परिपक्व बन गए और १० साल की उम्र में तो उन्होंने सभा में बोलना शुरू कर दिया। ११ साल की उम्र में तो उन्होंने समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में लेख लिखना शुरू किया और लेखन प्रतियोगिता में कई ईनाम भी जीते। १२ साल की उम्र में उन्होंने ३०० पदों की कविता “घड़ियाल” (A Watch) लिखी। एक लेखक के तौर पर वे कच्छ के राजा से मिले थे, वहाँ पर उनके हस्ताक्षर की बहुत प्रशंसा की गई थी। १३ साल की उम्र में उन्होंने पिता की दुकान पर जाना शुरू कर दिया था। दुकान पर बैठे-बैठे उन्होंने श्री राम एवं श्री कृष्ण के जीवन पर कई कविताओं की रचना की।

१८८२ में वे युवा कवि के तौर पर लोकप्रिय हो गए, इसलिए वे “कवि” कहलाए।

“अवधान”, यह ध्यान और स्मरण के लिए की जाने वाली बहुत कठिन कसौटी है। इसमें व्यक्ति को एक ही साथ अनेक चीजें और क्रियाएँ करनी पड़ती हैं। १८८४ में वे ववाणीया (गाँव) से मोरवी आ गए, वहाँ पर उन्होंने शास्त्री शंकरलाल एम. भट्ट को एक साथ आठ अवधान करते हुए देखा। यह देखते ही उन्होंने जल्दी से उसे ग्रहण कर लिया। दो दिनों के बाद उन्होंने अपने दोस्तों और बाद में अन्य लोगों के सामने इसे प्रदर्शित किया। शुरुआत में उन्होंने लोगों को १२ अवधान दिखाए। लेकिन उसके बाद वढवाण (गाँव) में २००० लोगों के सामने उन्होंने १६ अवधान

दिखाए, जिसकी अखबारों में बहुत प्रशंसा की गई। बोटाद (गाँव) में उन्होंने ५२ अवधान दिखाए, जिसमें तीन खिलाड़ियों के साथ शतरंज का खेल, तीन खिलाड़ियों के साथ ताश खेलना, चेस खेलना, छोटी घंटी कितनी बार बजी उसका ध्यान रखना, जोड़-घटाव, गुणाकार, भागाकार वाले अंकगणित के सवाल और माला के आवर्तन की गिनती रखना, आठ नए सवाल हल करना, लोगों द्वारा दिए गए आठ विविध विषयों पर तत्क्षण पद रचना, ग्रीक, इंग्लिश, संस्कृत, हिन्दी, अरबी, लैटिन, उर्दू, गुजराती, मराठी, बंगाली, मारू, जडेजी जैसी विविध भाषाओं के विभिन्न ४०० शब्दों को योग्य क्रम में लगाना और उसका अर्थघटन करना, विद्यार्थी को पढ़ाना, ये सभी काम एक साथ कर दिखाए।

तत्पश्चात उन्होंने २२ जनवरी, १८८७ में सर प्रेमजी कावसजी इन्स्टिट्यूट, मुंबई में शतावधान (१०० अवधान) दिखाए, जिसमें उन्हें बहुत प्रशंसा और प्रसिद्धि मिली। उनके इस प्रदर्शन के लिए उन्हें इन्स्टिट्यूट और गणमान्य व्यक्तियों की ओर से गोल्ड मेडल द्वारा नवाज़ा गया। यह अवधान, वे अपने अंतःकरण की शुद्ध अवस्था के कारण सिद्ध कर सकें।

राजचंद्रजी को लगा कि अवधान के प्रदर्शन से उन्हें जो लोकप्रियता मिल रही है, वह उनकी आध्यात्मिक प्रगति में बाधक है, इसलिए धीरे-धीरे उन्होंने ऐसे प्रदर्शन करने छोड़ दिए। उस समय उनकी आयु २० वर्ष की थी। उसके बाद श्रीमद् अपना ज्यादातर समय जंगल के एकांत में, पर्वतों पर और गुजरात के एकांत स्थलों पर ही बिताने लगे और आत्मा के सुख में डूबे रहकर सरल जीवन जीने लगे। एकांत में रहने का एक ही ध्येय था कि - समाधि और ध्यान से निरंतर आत्मा में ही डूबे रहना। १९०१ में ३३ साल की उम्र में उनका आत्मा संपूर्ण जागृत हो गया था।

वे अपने अंतःकरण की शुद्ध
अवस्था के कारण सिद्ध कर सकें

अंदर बाहर



डॉ. वायने डायर (Wayne dyer), जो “**फादर ऑफ मोटिवेशन**” के नाम से जाने जाते हैं, वे जानेमाने आंतरराष्ट्रीय लेखक थे एवं आत्मविकास और अध्यात्म विकास जैसे विषयों के वक्ता थे। उनके चार दशक से भी लंबे कार्यकाल में उन्होंने चालीस से ज्यादा पुस्तकें लिखीं, कई ऑडियो एवं वीडियो कार्यक्रम बनाए और हजारों टेलिविज़न एवं रेडियो शो में उपस्थित रहें। वायने डायर और उनके विद्यार्थी के बीच एक रसप्रद संवाद, डॉ. डायर के शब्दों में :

“मुझ में जितनी ताकत है उतनी ज़ोर से अगर मैं इस संतरे को दबाऊँ तो उसमें से क्या निकलेगा? मैंने उससे (विद्यार्थी से) पूछा।

जैसे कि मैं पगला गया हूँ, ऐसी नज़रों से उसने मुझे देखा और कहा, “संतरे का रस, और क्या?”

“तुझे लग रहा है कि उसमें से सेब का रस निकलेगा?”

“नहीं!” वह हँसने लगा।

“अंगूर के रस के बारे में क्या ख्याल है?”

(“क्या अंगूर का रस निकलेगा?”)

“नहीं।”

“तो उसमें से क्या निकलेगा?”

“अलबत्त, संतरे का रस”

“क्यों? संतरे को दबाने से संतरे का रस ही क्यों निकलेगा?”

वह थोड़ा सा चिढ़कर बोला, “वह संतरा है, तो संतरे में जो होगा वही बाहर आएगा न।” मैंने सिर हिलाया।

“चलो, ऐसा मान लेते हैं कि यह संतरा, संतरा नहीं है बल्कि तुम हो। तुम्हें कोई दबा रहा हो, तुम पर बहुत दबाव डाल रहा है, तुम्हें ऐसा कुछ कह रहा है जो तुम्हें पसंद नहीं है, तुम्हारी भावनाओं को ठेस पहुँचाता रहा हो, फिर तुम गरम हो जाते हो और तुम में से गुस्सा, कषाय वगैरह बाहर आ जाते हैं। क्यों?” “क्योंकि जो अंदर होगा वही बाहर आएगा न।”

“जीवन की यह उत्तम शिक्षा है। जीवन में जब-जब संयोगों का दबाव आएगा तब-तब क्या बाहर आएगा? जब कोई आपको दुःख दे या आपको बुरा लगे ऐसा करे, तब क्या बाहर आएगा? क्रोध, दुःख और भय हमारे अंदर से बाहर आएँगे, क्योंकि हमारे अंदर वही भरे पड़े हैं।

इसीलिए अंदर क्या भरना, वह हमारे हाथ में है।

आपके अंदर अगर प्रेम भरा होगा तो जब कोई आप पर दबाव डालेगा, तो भी आपके अंदर से प्रेम ही बाहर आएगा, क्योंकि अंदर से आप प्रेम से भरपूर हो। आप अपने अंदर की सारी नकारात्मकता को निकालकर, वहाँ प्रेम भरेंगे तो आप देखोगे कि आपका जीवन कितना प्रेम से भरपूर हो जाएगा।”

मैं आभारी हूँ

मेरे मकान के बराबर ही एक नए मकान का कन्स्ट्रक्शन चल रहा था। बहुत से मज़दूर रोज़ आकर सिमेन्ट, रेत वगैरह का उपयोग करके, मेहनत से काम करते थे। इन मज़दूरों के साथ उनके छोटे बच्चे भी रहते थे। जब माँ-बाप काम कर रहे होते थे, तब वे बच्चे समय बिताने के लिए खेलते रहते थे, खास तौर पर ट्रेन-ट्रेन खेलते थे। इस खेल में एक बच्चा एन्जिन बनकर मुँह से छुक-छुक गाड़ी की आवाज़ निकालता और पीछे से उसकी कमीज़ पकड़कर दूसरा बच्चा डिब्बा बन जाता। इसी तरह उसके पीछे बच्चा लगकर, बच्चे “चेन” बनाते थे। बारी-बारी से सभी बच्चे कभी एन्जिन तो कभी डिब्बा बनते।

मैंने देखा कि इन सभी में से एक बच्चा हमेशा सब से पीछे रहता और गार्ड बनता था। उसने एक छोटी सी चूड़ी पहन रखी थी और हाथ में एक हरे रंग का कपड़ा पकड़ा था। मैंने जाकर उससे पूछा, “बेटा, तुझे कभी एन्जिन या डिब्बा बनने की इच्छा नहीं होती क्या?” उस बच्चे ने मुझे नम्रता से जवाब दिया, “इच्छा तो होती है लेकिन मेरे पास कमीज़ नहीं है तो मेरे पीछे वाले

बच्चे मुझे कैसे पकड़ेंगे और कैसे डिब्बा बनेंगे?” उस बच्चे की आँखों में मैंने नमी देखी।

लेकिन इस बात से मुझे एक महत्वपूर्ण शिक्षा मिली। वह बच्चा ज़िद भी कर सकता था और अपने माँ-बाप पर कुछ भी न दिलाने का इलज़ाम भी लगा सकता था या घर पर ही बैठा रहता, लेकिन इसके बजाय उसने ज़िंदादिली से खेल का हिस्सा बनकर आनंद लेने का उपाय ढूँढ निकाला।

हमें भी जीवन में कई बार जो चाहिए वे चीज़ें नहीं मिलतीं और हम शिकायतें करते हैं - मेरे पास स्कूटी नहीं है, गाड़ी नहीं है, मोबाइल नहीं है वगैरह, वगैरह। जीवन में ऐसा ही है। कभी कोई चीज़ मिल जाती है और कभी किसी को नहीं भी मिलती। लेकिन हमेशा जो मिला हो, प्राप्त हुआ हो, उसी का हमें अभिवादन करना चाहिए और उपकार मानना चाहिए कि मेरे पास इतना तो है।

बोधपाठ - “इस घटना से यह बोध लेने जैसा है कि जीवन में जो प्राप्त हुआ है, उसके लिए हमेशा आभार व्यक्त करने वाला दृष्टिकोण विकसित करना चाहिए।”



कॉमनसेन्स



पढ़ाई पूरी करने के बाद इज़रा और थॉमस दोनों को एक ही कंपनी में अच्छी नौकरी मिल गई। दोनों अपनी सूझ और मेहनत से काम करते थे। कुछ सालों बाद मैनेजर ने इज़रा की प्रमोशन करके उसे सीनियर सेल्स मैनेजर की पदवी दी। थॉमस को यह पसंद नहीं आया और जलन होने लगी। फिर भी उसने काम जारी रखा।

एक दिन थॉमस ने तय किया कि अब वह इज़रा के साथ काम नहीं कर पाएगा, इसलिए कंपनी में इस्तीफा दे देना है, लेकिन ऐसा करने से पहले वह मैनेजर के पास गया और कहा कि उसकी मेहनत का मापदंड कंपनी ठीक तरह से नहीं कर रही है इसलिए वह नौकरी छोड़ना चाहता है।

मैनेजर जानता था कि थॉमस की तुलना में इज़रा ज्यादा मेहनत और बुद्धिमानी से कुशलतापूर्वक काम कर रही थी और इस चीज़ का थॉमस को एहसास दिलाने, उसने एक तरीका अपनाया। उसने थॉमस से कहा कि, “बाज़ार जाओ और मुझे बताओ कि कोई तरबूज बेच रहा है या नहीं?”

थॉमस बाज़ार जाकर थोड़ी देर में लौट आया।

“हाँ, एक व्यक्ति तरबूज बेच रहा है।” मैनेजर ने पूछा, “किस दाम पर?” थॉमस वापस बाज़ार गया और आकर कहने लगा एक किलो के १३.५० दाम है। मैनेजर ने कहा, “अच्छा। अब यही काम इज़रा को देते हैं”, ऐसा कहकर इज़रा को बुलाया। थॉमस से कहा कि, “देखना इज़रा क्या करेगी।”

इज़रा बाज़ार जाकर आई और मैनेजर से कहा, “इस शहर में एक ही ऐसा व्यक्ति है जो तरबूज बेच रहा था। वह १ किलो के १३.५० रुपए लेता है, हाल में उसके पास ९३ तरबूज हैं, लेकिन प्रति तरबूज २७ रुपए के हिसाब से वह हमें ४ महीने तक रोज़ के १०० तरबूज दे सकता है। तरबूज अच्छे और ताज़ा हैं। हमें कल सुबह १० बजे तक उसके साथ करार कर लेना चाहिए ताकि हमें पिछले वर्ष से ज्यादा फायदा हो सके। मैंने सब पता कर लिया है, आपको जब ज़रूरत हो तब मुझ से कहना।”

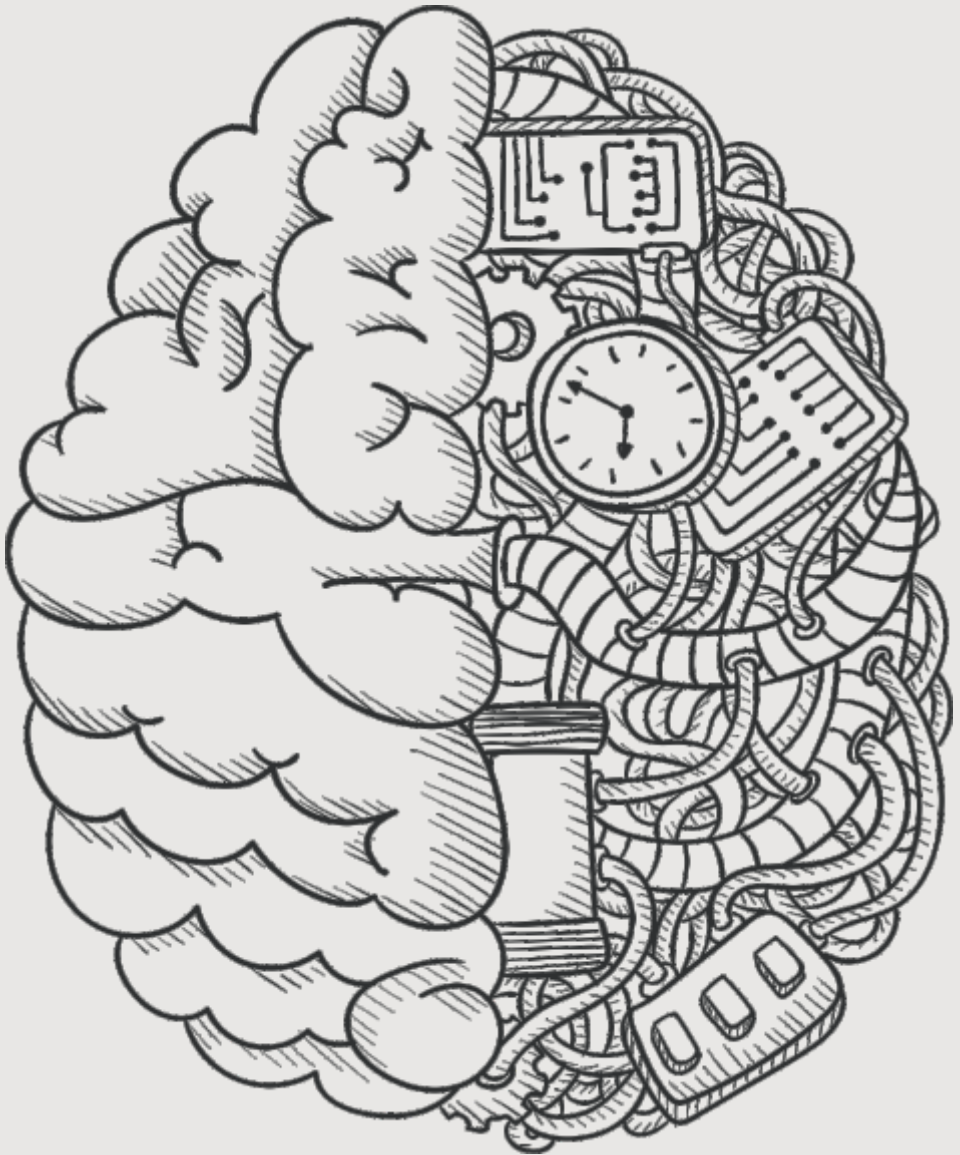
यह सुनकर थॉमस दंग रह गया। वह समझ गया कि खुद की और इज़रा की काबिलियत में क्या फर्क है। उसने तय किया कि अब इस्तीफा देने के बजाय इज़रा के साथ रहकर काम सीखना है।

आप से जितना कहा गया हो उतना करने के लिए आपको पगार मिलता है, लेकिन अपनी अक्ल लगाकर किसी की अपेक्षा से भी ज्यादा काम करेंगे तो ही आपको प्रमोशन या दूसरे सुविधाजनक परिणाम मिलेंगे। जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए पारदर्शिता, जोश और काम करने की तत्परता बहुत ज़रूरी है।

बोधपाठ - आप में जो काबिलियत है उसका सदुपयोग करके सफलता प्राप्त करो।

क्या आप जानते हैं ?

कम्प्युटर की तरह चूहों में भी शॉर्ट-टर्म, रेन्डम-एक्सेस मेमरी होती है जिससे वे भी जानकारी इकट्ठा करके रोज़-ब-रोज़ के काम में उपयोग कर सकें।



इंसानों में और कौओं में भी ऐसी “मेमरी” होती है जिसे “वर्किंग मेमरी” (काम में सहायक यादशक्ति) कह सकते हैं। इंसानों में इस मेमरी सिस्टम का उपयोग खेल खेलने में, गणित के सवाल हल करने में या बातचीत के प्रयोग के समय कर सकते हैं।

मनुष्य के दिमाग का रसप्रद विश्लेषण -

मन का एक अलग ही अस्तित्व है, वह अतःकरण का ही एक हिस्सा है और दूसरा “दिमाग” है जो एक मशीन ही है, मिकेनिकल। वह निरंतर काम करता ही रहता है। पूर्वकर्म के आधार पर दिमाग में तरंगे उत्पन्न होती हैं और “व्यवस्थित” की प्रेरणा के अनुसार “विचार” उत्पन्न होते हैं, जो “मन” द्वारा हमें पता चलते हैं। इस प्रकार विचारों की प्रक्रिया का उद्भव होता है। - दादाश्री

मनुष्य का दिमाग तो इस ब्रह्मांड में सब से जटिल और अटपटी चीज़ है। मनुष्य का दिमाग अपनी ज़रूरत की और पसंद की चीज़ों की याद स्टोर करने का काम करता है। “दिमाग” और “चेतना” किसी भी मनुष्य की पर्सनैलिटी दिखाने में असरकारक भूमिका अदा करते हैं। दिमाग मनुष्य की नसों के संचालन (नर्वस सिस्टम) के कमान्ड सेन्टर (आदेश लेना/देना) के तौर पर काम करता है। वह मनुष्य को काबिल बनाकर जीवन में सहायक बनता है। दिमाग कुछ मूल्यवान कार्य करता है लेकिन कई लोगों को इसका पता नहीं है। वे नीचे दिए गए अनुसार हैं।

- १) मानव शरीर में दिमाग ही एक ऐसा अंग है जो ?
- २) मनुष्य का दिमाग शरीर में उत्पन्न होने वाली ऊर्जा का ज्यादातर हिस्सा, लगभग २० % इस्तेमाल करता है।
- ३) दिमाग में लगभग १०० अरब न्युरॉन (ब्रेन सेल्स) हैं, जो दिमाग की कार्यशक्ति बढ़ा सकते हैं।
- ४) एक स्वस्थ व्यक्ति में चर्बी का सब से ज्यादा हिस्सा उसके दिमाग में होता है। दिमाग के अंदर लगभग ७५ % द्रव्य है, जो विविध कार्य संचालित करता है।
- ५) दिमाग के एक हिस्से को नियोकोर्टेक्स (neocortex) कहते हैं, वह भाषा और शरीर की चेतना को कार्यरत रखता है और यह लगभग ७६ % होता है।
- ६) मनुष्य अपने दिमाग का १० % भी इस्तेमाल नहीं करते। यह मान्यता गलत है, क्योंकि दिमाग के सभी हिस्से कार्यशील रहते हैं।
- ७) हृदय से निकलने वाला रक्त लगभग १५ से २० % दिमाग में हर मिनट पहुँचता रहता है।
- ८) दिमाग लगभग २५ वॉट ऊर्जा इस्तेमाल करता है जो एक बल्ब को प्रकाशित कर सके उतनी है।
- ९) मनुष्य का दिमाग, हम जितना मानते हैं उतना चौकस नहीं होता, क्योंकि कई ऐसे किस्से हैं कि हकीकत कुछ और ही होती है और दिमाग उसे उस तरह समझ नहीं पाता।



ज्ञानी विद यूथ

प्रश्नकर्ता : मुझे बाहर घूमने जाना और मोबाइल पर गेम्स खेलना पढ़ाई से ज्यादा अच्छा लगता है। मुझे यह गलत नहीं लगता, क्योंकि मुझे पढ़ाई में अच्छे मार्क्स मिलते हैं और मेरे अन्य दोस्त भी इसी तरह जीवन का मज़ा लेते हैं। तो मैं क्या करूँ?

पूज्यश्री : ऐसा है कि हम एक्सरसाइज़ के लिए खेलने जाएँ वह अलग बात है। घूमने जाओ, वॉक करने, वह अलग बात है लेकिन गार्डन में जाकर ग्रीनरी देखते रहना, वहाँ बैठकर गप्पें लगाना और मोबाइल पर गेम खेलना, वह टाइम पास नहीं बल्कि टाइम वेस्ट करते हैं। जाँच करना कि टाइम वेस्ट करते हैं या

टाइम का सदुपयोग करते हैं? इसे सदुपयोग कह सकते हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

पूज्यश्री : वेस्ट ही कहलाएगा न? किसके बाप के पैसों से यह सब? पापा पढ़ाई के लिए भेजें और हम ऐसा करें तो क्या यह समझदारी का काम है?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

पूज्यश्री : ज़रूरत के अनुसार होना चाहिए, लेकिन मोबाइल पर गेम तो वेस्ट ऑफ टाइम है। इसके बजाय एक्सरसाइज़ करो, जॉगिंग करो, वॉक करो। एक घंटा टाइम निकालो। तो सदुपयोग होगा। तबियत भी अच्छी बनेगी और एकाग्रता की शक्ति बढ़ेगी। वर्ना अभी तो मार्क्स अच्छे आएँगे लेकिन धीरे-धीरे सब बिगड़ेगा। शराब पीने वाले के साथ घूमने वाला व्यक्ति कहेगा, “हमें गलत काम नहीं करना चाहिए।” फिर कुछ ही दिनों में खुद भी पीने लगता है। यह कुसंग है। अगर लोग कुँए में और गटर में गिरें तो क्या हमें भी गिरना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : लेकिन ज्यादातर ऐसा होता है कि दूसरे खेलने वाले कहते हैं कि मैं इस लेवल पर आ गया, यह गेम जीत गया।

पूज्यश्री : हाँ, हमें समझ जाना चाहिए कि ये मनुष्यता का समय बिगाड़ रहा है। एक घंटे में तो भगवान बन सकते हैं लेकिन वहाँ तो एक घंटे में अधोगति के बीज डालते हैं। और सब दोस्त मिलकर घूमने गए हों तो वहाँ कैसी बातें करते हैं?

प्रश्नकर्ता : कुसंग की ही।

पूज्यश्री : विषय की ही होती हैं। एक्टर-एक्ट्रेस की होती हैं। या मैं इस गेम में आगे बढ़ गया। पढ़ाई में आगे आए तो समझ सकते हैं। हेल्दी स्पर्धा होनी चाहिए, क्लेश वाली नहीं। अर्थात् यह सब नुकसानदायक है, इतना समझने जैसा है। बाकी आजकल तो उन्हें कौन बचाएगा, क्योंकि पूरा समूह अधोगति के प्रवाह में खिंचा चला जा रहा है। अगर कभी सत्संग में आए, GNC में आए, कुछ सुने, समझे कि यह सत्संग कोई धर्म नहीं है। सही समझ, सही संस्कार प्राप्त करने की जगह, संस्कार सिंचन है। तभी ये समझेंगे कि इस मनुष्य जन्म का कितना सदुपयोग कर सकते हैं, उसके बजाय दुरुपयोग कर रहे हैं। अभी तो पढ़ाई में अच्छे मार्क्स आएँगे लेकिन धीरे-धीरे बिगड़ता जाता है। नाइन्टी फाइव लाने वाले की धीरे-धीरे सप्लीमेन्टरी आने लगती है, इस कुसंग से बिगड़-बिगड़ कर। सातवीं-आठवीं कक्षा में हाइएस्ट मार्क्स लाता है, नौवीं से बिगड़ता जाता है। दसवीं, ग्यारहवीं, बारहवीं कक्षा में बिल्कुल डिब्बा! चेहरे का नूर उड़ जाता है, क्योंकि विषय में, टी.वी., मूवी, मोबाइल और गेम्स में समय बिगाड़कर पढ़ाई बिगाड़ता है, फिर चित्त बिगड़ता है, बहुत भयंकर बिगड़ता है। चित्त को रोककर रखने के लिए गेम्स खेलता है, चित्त किसमें इस्तेमाल करूँ? सदुपयोगी, संस्कारी चीज़ें उसके पास नहीं हैं और ये सभी गलत चीज़ें मिल जाती हैं और चित्त बिगड़ता जाता है। फिर धारण शक्ति खत्म हो जाती है, समझ शक्ति खत्म हो जाती है। छोटी सी बात के लिए अगर उसे गेम्स खेलते-खेलते उठा दिया हो तो दिमाग खराब हो जाता है। गुस्सा-बुस्सा, चिढ़ने लगता है क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

पूज्यश्री : क्योंकि मोह ने घेर लिया है और उसका चित्त निर्बल होने लगता है। इसलिए सोचकर देखना कि इस तरह से चित्त बिगड़ता है। हितकारी नहीं है।

मा	फा	द	र	ऑ	फ	मो	टि	वे	श	न	इ
न्य	आपने कितनी अच्छी तरह से यह अंक पढ़ा है?										गो
ता	<h1>चलो खेलें</h1>										अं
इ											तः
न्ट	नीचे दिए गए प्रश्नों के जवाब पेज के आसपास के बॉक्स में छुपे हुए हैं। उसे ढूँढो और प्रश्नों के हल लाइए।										क
ले	१. विश्वविख्यात लेखक डॉ. वायने डायर को उनके प्रशंसक जिस नाम से बुलाते थे।										र
क	२. एक ही समय पर कई प्रकार की चीज़ों और प्रक्रियाओं पर ध्यान लगाकर याद करके मौखिक परीक्षा।										ण
ट	३. मैं मानव शरीर में उत्पन्न होती ऊर्जा का सब से अधिक मात्रा में उपयोग करता हूँ।										ज्ञा
ल	४. मानव शरीर की कार्यप्रणाली जिस पर निर्भर है ऐसे दो अंग में से एक?										नी
क्ष्मी	५. कोई एक कार्य होने से पहले यहाँ फोटो खींचता है या तो एक पार्लियामेन्टरी कार्यप्रणाली की तरह काम करता है।										पु
नं	६. वह अलग-अलग पैम्फलेट्स दिखाता है।										रु
द	७. वह (चीज़) जैसी हो वैसा ही फोटो खींचता है।										ष
न	८. मेरी सलाह लिए बिना कोई निर्णय नहीं ले सकते।										मा
चि	९. वह भारत के राष्ट्रपति की तरह व्यवहार करता है।										इ
त्त	१०. आपका पूरा अतःकरण मेरी हाज़िरी से प्योर हो जाता है।										न्ड
बा	ह्य	क	र	ण		ब्रे	न	अ	व	धा	न

जवाब के लिए : <https://goo.gl/UKSBEM>



१८ शहरों में हुआ हैपीनेस कैम्प जिसमें १८०० जितने १३-२९ वर्ष के युवा भाइयों ने लिया था भाग...

जिसकी ज्यादा झलक मिलेगी youth.dadabhagwan.org पर...



सेन्टर	संख्या
जामनगर	६०
जुनागढ	१०३
गांधीधाम	७०
भावनगर	१००
सीमंधर सिटी १३-१६	१८०
वड़ोदा	१०५
भरुच	१४०
भुज	६०
गोधरा	८०
मेहसाणा	११०

सेन्टर	संख्या
पालनपुर	८०
सुरेन्द्रनगर	३०
वेरावल	६०
सूरत	१४०
हिंमतनगर	३०
आणंद	८०
सीमंधर सिटी १७-२१	२१०
राजकोट	७०
मुंबई	६०

જૂન ૨૦૧૭

વર્ષ : ૫, અંક : ૦૨

અર્થક્રમાંક : ૫૦

અક્રમ યૂથ

અક્રમ યૂથ

લવાજમ પર ઑફર



40%

One Year

Price : ₹ ~~125~~

You pay : ₹ 75

52%

Five Year

Price : ₹ ~~625~~

You pay : ₹ 300

Akram Youth Subscription Form

Full Name : _____

Address : _____

City : _____ State : _____ Country : _____

Pincode : _____ Phone : _____

E-Mail : _____ Date of Birth : ____/____/____

Gujarati English

1 Year ₹ ~~125~~ ₹ 75

5 Year ₹ ~~625~~ ₹ 300

D.D/M.O. should be in favour of 'Mahavideh Foundation', payable at Ahmedabad.

Please enclose payment or pay by credit card online at :
store.dadabhagwan.org/akram-youth

Send this form and enclosed payment to

Akram Youth

'Dada Darshan', 5, Mamta Park Society, B/h.
Navgujarat college, Usmanpura, Ahmedabad -
380 014, Gujarat, India.

We would love to hear from you.
Send us your feedback and suggestions.
Email: akramyouth@dadabhagwan.org



Send your suggestions and feedback at : akramyouth@dadabhagwan.org

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation-Owner.

Printed at : Amba Offset, B-99, K6 Road, Electronics GIDC, Sector 25, Gandhinagar - 382044, Gujarat, India



૨૪

જૂન ૨૦૧૭